कौटिल्य के मंडल सिद्धांत और भारत की समकालीन पड़ोसी नीतिः कूटनीतिक हितों, सुरक्षा और शक्ति-संतुलन का अध्ययन

मनीषा (शोधार्थी), डॉ सुशीला बेदी दुबे (शोध निर्देशिका)
विभाग - राजनीति विज्ञान, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, चूड़ेला, झुंझुनूं
manishaverma35347@gmail.com

सारांश

भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य का मंडल सिद्धांत राज्य-व्यवहार, विदेश नीति और शक्ति-संबंधों को समझने का एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि किसी भी राज्य की बाह्य नीति स्थिर भावनात्मक संबंधों के आधार पर नहीं, बल्कि बदलती परिस्थितियों, राष्ट्रीय हित, सुरक्षा आवश्यकताओं और शक्ति-संतुलन के यथार्थ मूल्यांकन के आधार पर निर्मित होती है। कौटिल्य ने पड़ोसी राज्यों, मित्र राज्यों, मध्यस्थ शक्तियों और शत्रु शक्तियों के संबंधों को जिस व्यावहारिक दृष्टि से समझाया, वह आज भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति की यथार्थवादी प्रवृत्तियों को समझने में उपयोगी प्रतीत होता है।

समकालीन भारत की पड़ोसी नीति को इसी दृष्टि से देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि भारत अपने आसपास के क्षेत्र में केवल सांस्कृतिक निकटता या ऐतिहासिक संबंधों के आधार पर नीति नहीं बनाता, बल्कि सुरक्षा, सीमा-प्रबंधन, आर्थिक सहयोग, क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री हित, संपर्क-सुविधा और सामरिक संतुलन जैसे अनेक कारकों को ध्यान में रखता है। पाकिस्तान और चीन के साथ सुरक्षा-संबंधी चुनौतियाँ, नेपाल और भूटान के साथ भौगोलिक-सामरिक निकटता, बांग्लादेश के साथ संपर्क और सीमा-प्रबंधन, श्रीलंका और मालदीव के साथ समुद्री हित तथा म्यांमार के साथ पूर्वोत्तर सुरक्षा और 'एक्ट ईस्ट' नीति-ये सभी भारत की पड़ोसी नीति को बहुआयामी बनाते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को भारत की वर्तमान पड़ोसी नीति के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक यथार्थवाद आज की विदेश नीति में प्रत्यक्ष रूप से न सही, परंतु वैचारिक संकेतों के रूप में अवश्य दिखाई देता है। भारत की पड़ोसी नीति में सहयोग और सतर्कता, संवाद और दबाव, विकास-सहायता और सामरिक तैयारी, तथा क्षेत्रीय नेतृत्व और शक्ति-संतुलन का जो मिश्रित स्वरूप दिखाई देता है, वह कौटिल्यीय राजनीतिक दृष्टि की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

प्रमुख शब्द

कौटिल्य, मंडल सिद्धांत, पड़ोसी नीति, भारतीय विदेश नीति, शक्ति-संतुलन, कूटनीति, राष्ट्रीय हित, दक्षिण एशिया, सुरक्षा नीति, रणनीतिक यथार्थवाद।

भूमिका

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में किसी भी राज्य की विदेश नीति केवल आदशार्ें या भावनात्मक संबंधों से संचालित नहीं होती, बल्कि वह राष्ट्रीय हित, सुरक्षा, शक्ति-संतुलन और बदलती परिस्थितियों के आधार पर निर्मित होती है। भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य ने इस यथार्थ को बहुत पहले समझ लिया था। उनकी कृति अर्थशास्त्र में राज्य, शक्ति, कूटनीति, युद्ध, संधि, मित्रता और शत्रुता से संबंधित जो विचार मिलते हैं, वे आज भी राजनीतिक व्यवहार को समझने में उपयोगी हैं। विशेष रूप से कौटिल्य का मंडल सिद्धांत पड़ोसी राज्यों और शक्ति-संबंधों के विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

मंडल सिद्धांत का मूल विचार यह है कि किसी राज्य के आसपास स्थित शक्तियाँ उसके हितों को प्रभावित करती हैं। निकट का राज्य संभावित चुनौती हो सकता है, जबकि उस चुनौती के विरुद्ध दूर स्थित शक्ति सहयोगी बन सकती है। कौटिल्य ने मित्र, शत्रु, मध्यस्थ, उदासीन और सहयोगी राज्यों की जो व्याख्या की, वह इस बात को स्पष्ट करती है कि विदेश नीति स्थायी मित्रता या स्थायी शत्रुता पर आधारित नहीं होती, बल्कि परिस्थितियों और हितों के अनुसार बदलती रहती है। इस दृष्टि से उनका चिंतन आधुनिक यथार्थवादी राजनीति के बहुत निकट दिखाई देता है।

भारत की समकालीन पड़ोसी नीति को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि भारत को अपने आसपास के क्षेत्र में अनेक प्रकार की चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ता है। पाकिस्तान के साथ सीमा, आतंकवाद और सुरक्षा से जुड़े प्रश्न हैं, चीन के साथ सीमा-विवाद और शक्ति-संतुलन का प्रश्न है, नेपाल और भूटान के साथ भौगोलिक तथा सामरिक निकटता है, बांग्लादेश के साथ सीमा-प्रबंधन और संपर्क-सहयोग है, श्रीलंका तथा मालदीव के साथ समुद्री सुरक्षा और हिंद महासागर क्षेत्र के हित जुड़े हुए हैं। म्यांमार भारत की पूर्वोत्तर सुरक्षा और एक्ट ईस्ट नीति के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत की पड़ोसी नीति में एक ओर संवाद, आर्थिक सहयोग, विकास-साझेदारी, सांस्कृतिक संबंध और क्षेत्रीय संपर्क को महत्व दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर सुरक्षा, सामरिक सतर्कता और शक्ति-संतुलन पर भी ध्यान दिया जाता है। यही संतुलित दृष्टि कौटिल्यीय राजनीति की प्रासंगिकता को बढ़ाती है। भारत न तो केवल आदर्शवादी नीति अपनाता है और न ही केवल संघर्ष की नीतिय वह परिस्थिति के अनुसार सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संतुलन और रणनीतिक तैयारी का संयोजन करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को भारत की समकालीन पड़ोसी नीति के संदर्भ में समझना है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय राजनीतिक यथार्थवाद आज के दक्षिण एशियाई और हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय परिदृश्य में वैचारिक रूप से उपयोगी हो सकता है। यह अध्ययन भारत की विदेश नीति में राष्ट्रीय हित, क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा और शक्ति-संतुलन के महत्व को रेखांकित करता है।

साहित्य समीक्षा

कौटिल्य के राजनीतिक चिंतन पर भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने व्यापक रूप से अध्ययन किया है। अधिकांश अध्ययनों में अर्थशास्त्र को शासन, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, दंडनीति और विदेश नीति का व्यावहारिक ग्रंथ माना गया है। कौटिल्य का महत्व इस कारण विशेष है कि उन्होंने राज्य-व्यवहार को आदर्शवादी दृष्टि से नहीं, बल्कि शक्ति, हित, सुरक्षा और परिस्थिति के आधार पर समझाया। उनके विचारों में राज्य की स्थिरता और विस्तार के लिए कूटनीति, सैन्य तैयारी, आर्थिक शक्ति और सूचना-संग्रह को समान रूप से महत्व दिया गया है।

मंडल सिद्धांत पर किए गए अध्ययनों में इसे कौटिल्य की विदेश नीति का केंद्रीय आधार माना गया है। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य अकेला नहीं होता, बल्कि वह अनेक निकटवर्ती और दूरवर्ती शक्तियों से घिरा रहता है। इन शक्तियों के साथ संबंध स्थायी नहीं होते, बल्कि राज्य के हितों और राजनीतिक परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। इसीलिए कौटिल्य मित्र, शत्रु, अरि-मित्र, मित्र-मित्र, मध्यस्थ और उदासीन जैसी अवधारणाओं के माध्यम से शक्ति-संबंधों की जटिलता को स्पष्ट करते हैं।

भारतीय विदेश नीति पर उपलब्ध आधुनिक अध्ययनों में यह माना गया है कि स्वतंत्रता के बाद भारत ने आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता, पंचशील और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को महत्व दिया, परंतु समय के साथ उसकी विदेश नीति अधिक व्यावहारिक और हित-आधारित होती गई। विशेष रूप से पड़ोसी देशों के संदर्भ में भारत ने सहयोग, संपर्क, विकास-सहायता, सुरक्षा-सतर्कता और सामरिक संतुलन को साथ लेकर चलने का प्रयास किया है।

भारत की पड़ोसी नीति पर हुए अध्ययनों में पाकिस्तान और चीन के साथ सुरक्षा चुनौतियों, नेपाल और भूटान के साथ सामरिक निकटता, बांग्लादेश के साथ संपर्क और सीमा-प्रबंधन, श्रीलंका और मालदीव के साथ हिंद महासागर की रणनीति, तथा म्यांमार के साथ पूर्वोत्तर सुरक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है। इन सभी संबंधों में भारत को सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यही स्थिति कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की वैचारिक उपयोगिता को बढ़ाती है।

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि कौटिल्य का मंडल सिद्धांत केवल प्राचीन राजतंत्रीय व्यवस्था तक सीमित नहीं है। इसके मूल तत्व—राष्ट्रीय हित, शक्ति-संतुलन, सुरक्षा, सहयोग, सतर्कता और परिस्थिति-आधारित कूटनीति—आज भी भारत की पड़ोसी नीति को समझने में उपयोगी हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी वैचारिक संबंध को समकालीन संदर्भ में स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य कौटिल्य के मंडल सिद्धांत और भारत की समकालीन पड़ोसी नीति के बीच वैचारिक संबंध का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की मूल अवधारणा और उसकी राजनीतिक उपयोगिता को समझना।

2. भारत की समकालीन पड़ोसी नीति में राष्ट्रीय हित, सुरक्षा और शक्ति-संतुलन के महत्व का विश्लेषण करना।

3. यह स्पष्ट करना कि दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की नीति किस प्रकार सहयोग और सामरिक सतर्कता दोनों पर आधारित है।

4. पाकिस्तान, चीन, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार और मालदीव के संदर्भ में भारत की क्षेत्रीय कूटनीति को समझना।

5. कौटिल्यीय राजनीतिक यथार्थवाद की वर्तमान भारतीय विदेश नीति में प्रासंगिकता को रेखांकित करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को भारतीय राजनीतिक चिंतन के स्रोत के रूप में समझते हुए भारत की वर्तमान पड़ोसी नीति के संदर्भ में उसका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में अर्थशास्त्र, भारतीय विदेश नीति से संबंधित ग्रंथों, शोध-लेखों, नीति-विश्लेषणों और समकालीन कूटनीतिक घटनाओं को आधार बनाया गया है।

इस अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टिकोण इसलिए अपनाया गया है ताकि प्राचीन भारतीय कूटनीतिक सिद्धांत और आधुनिक विदेश नीति के बीच समानताओं तथा सीमाओं को समझा जा सके। शोध में यह मानकर चला गया है कि कौटिल्य का मंडल सिद्धांत आज की विदेश नीति को सीधे निर्देशित नहीं करता, किंतु वह राष्ट्रीय हित, शक्ति-संतुलन, सुरक्षा, सहयोग और रणनीतिक सतर्कता जैसी अवधारणाओं को समझने के लिए एक उपयोगी वैचारिक ढाँचा प्रदान करता है।

अध्ययन में भारत की पड़ोसी नीति को केवल राजनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसमें सीमा-सुरक्षा, क्षेत्रीय संपर्क, आर्थिक सहयोग, समुद्री हित, विकास-सहायता, सांस्कृतिक संबंध और सामरिक प्रतिस्पर्धा जैसे पहलुओं को भी ध्यान में रखा गया है। इस प्रकार शोध-पत्र प्राचीन राजनीतिक चिंतन और समकालीन कूटनीति के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है।

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की मूल अवधारणा

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत प्राचीन भारतीय विदेश नीति और अंतरराज्यीय संबंधों को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है। इस सिद्धांत में राज्य को अकेली इकाई के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे अपने चारों ओर स्थित अन्य राज्यों के साथ संबंधों के संदर्भ में समझा गया है। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राज्य की सुरक्षा, विस्तार और स्थिरता उसके पड़ोसी राज्यों तथा दूरस्थ शक्तियों के साथ संबंधों पर निर्भर करती है। इसी कारण मंडल सिद्धांत मूलतः शक्ति-संबंधों, हितों और कूटनीतिक व्यवहार का सिद्धांत है।

मंडल सिद्धांत का प्रमुख आधार यह है कि निकटवर्ती राज्य प्रायः प्रतिस्पर्धा या संघर्ष की स्थिति उत्पन्न कर सकता है, जबकि उस निकटवर्ती प्रतिद्वंद्वी का पड़ोसी राज्य संभावित मित्र बन सकता है। इस प्रकार कौटिल्य ने राज्य संबंधों को स्थायी मित्रता या स्थायी शत्रुता के आधार पर नहीं, बल्कि परिस्थिति और हित के आधार पर समझाया। उनके लिए राज्य-व्यवहार का मुख्य आधार राष्ट्रीय हित और सुरक्षा था।

कौटिल्य ने मंडल में विजिगीषु, अरि, मित्र, अरि-मित्र, मित्र-मित्र, मध्यस्थ और उदासीन जैसी अवधारणाओं का उल्लेख किया। विजिगीषु वह राजा है जो अपने राज्य की शक्ति और प्रभाव बढ़ाना चाहता है। अरि वह राज्य है जो उसके हितों के विरुद्ध खड़ा होता है। मित्र वह शक्ति है जो उसके हितों को समर्थन दे सकती है। मध्यस्थ और उदासीन राज्य वे होते हैं जो परिस्थितियों के अनुसार किसी पक्ष की ओर झुक सकते हैं या संतुलनकारी भूमिका निभा सकते हैं।

इस सिद्धांत की विशेषता यह है कि यह विदेश नीति को भावनात्मक आदशार्ें से अलग कर व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टि से देखता है। इसमें संधि, युद्ध, आसन, यान, संश्रय और द्वैधीभाव जैसी नीतियों का उल्लेख मिलता है, जिनसे स्पष्ट होता है कि कौटिल्य परिस्थिति के अनुसार नीति बदलने को आवश्यक मानते थे। इसलिए मंडल सिद्धांत आज भी राजनीतिक यथार्थवाद, शक्ति-संतुलन और क्षेत्रीय कूटनीति को समझने में उपयोगी माना जा सकता है।

भारत की समकालीन पड़ोसी नीति का स्वरूप

भारत की समकालीन पड़ोसी नीति बहुआयामी, व्यावहारिक और सुरक्षा-सचेत नीति के रूप में विकसित हुई है। भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक, आर्थिक और सामरिक रूप से प्रभावशाली देश है, इसलिए उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध केवल द्विपक्षीय स्तर तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनका प्रभाव क्षेत्रीय स्थिरता, व्यापार, सुरक्षा, संपर्क और सामरिक संतुलन पर भी पड़ता है। भारत की पड़ोसी नीति में सहयोग और सतर्कता दोनों समान रूप से दिखाई देते हैं।

भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में "Neighbourhood First" जैसी नीति को महत्व दिया है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग, संपर्क-सुविधा, व्यापार, ऊर्जा, आपदा-सहायता, विकास साझेदारी और जन-से-जन संबंधों को मजबूत करना है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार के साथ भारत ने सड़क, रेल, बंदरगाह, ऊर्जा और सांस्कृतिक संपर्कों को बढ़ाने का प्रयास किया है। इससे भारत क्षेत्रीय नेतृत्व और सहयोगी शक्ति के रूप में अपनी भूमिका मजबूत करता है।

IEJRD
E-ISSN NO:2349-0721

दूसरी ओर, भारत की पड़ोसी नीति केवल सहयोग पर आधारित नहीं है। पाकिस्तान के साथ आतंकवाद, सीमा-पार हिंसा और कश्मीर से जुड़े प्रश्न भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित करते हैं। चीन के साथ सीमा-विवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति-संतुलन और पड़ोसी देशों में उसके बढ़ते प्रभाव ने भारत को अधिक रणनीतिक सतर्कता अपनाने के लिए प्रेरित किया है। इस कारण भारत संवाद और प्रतिरोध, दोनों को परिस्थिति के अनुसार अपनाता है।

भारत की नीति में समुद्री सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण तत्व बन चुकी है। श्रीलंका, मालदीव और हिंद महासागर क्षेत्र भारत की सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार म्यांमार भारत की पूर्वोत्तर सुरक्षा और एक्ट ईस्ट नीति से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार भारत की पड़ोसी नीति केवल भौगोलिक निकटता का प्रश्न नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हित, क्षेत्रीय संपर्क और शक्ति-संतुलन का व्यापक प्रश्न है।

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की पड़ोसी नीति में मित्र, प्रतिस्पर्धी, मध्यस्थ और रणनीतिक सहयोगी सभी प्रकार के संबंध दिखाई देते हैं। भारत अपने आसपास के क्षेत्र में स्थिरता चाहता है, परंतु वह बदलती सामरिक परिस्थितियों के प्रति सतर्क भी रहता है। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत की समकालीन पड़ोसी नीति को व्यावहारिक और यथार्थवादी बनाता है।

मंडल सिद्धांत और भारत की पड़ोसी नीति का तुलनात्मक संबंध

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत और भारत की समकालीन पड़ोसी नीति के बीच प्रत्यक्ष समानता खोजना सरल नहीं है, क्योंकि दोनों के ऐतिहासिक संदर्भ अलग हैं। कौटिल्य का समय राजतंत्रीय व्यवस्था, क्षेत्रीय विस्तार और सैन्य शक्ति पर आधारित था, जबकि आज की विदेश नीति संप्रभु राष्ट्रों, अंतरराष्ट्रीय कानून, बहुपक्षीय संस्थाओं और वैश्विक कूटनीति के दायरे में संचालित होती है। फिर भी मंडल सिद्धांत के मूल तत्व आज भी क्षेत्रीय राजनीति को समझने में उपयोगी संकेत देते हैं।

मंडल सिद्धांत में पड़ोसी राज्य को स्वाभाविक रूप से सावधानीपूर्वक देखने की बात कही गई है। समकालीन भारत भी अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में मित्रता और सतर्कता दोनों का संतुलन बनाए रखता है। पाकिस्तान और चीन के संदर्भ में भारत की नीति सुरक्षा-केंद्रित दिखाई देती है, क्योंकि इन दोनों देशों के साथ सीमा, सामरिक प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा से जुड़े प्रश्न मौजूद हैं। वहीं भूटान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार के साथ भारत सहयोग, संपर्क और विकास-साझेदारी को महत्व देता है।

कौटिल्य के अनुसार विदेश नीति में स्थायी मित्र या स्थायी शत्रु नहीं होते, बल्कि राज्य अपने हितों के अनुसार नीति बनाता है। भारत की पड़ोसी नीति में भी यह व्यावहारिकता दिखाई देती है। भारत जहाँ एक ओर क्षेत्रीय सहयोग की बात करता है, वहीं दूसरी ओर अपने सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए कड़ा रुख भी अपनाता है। सीमा-सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी नीति, समुद्री हित, संपर्क-परियोजनाएँ और आर्थिक सहयोग इसी संतुलित नीति के उदाहरण हैं।

मंडल सिद्धांत शक्ति-संतुलन को भी महत्व देता है। आज भारत दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए अपने संबंधों को नए ढंग से व्यवस्थित कर रहा है। भारत का क्वाड, एक्ट ईस्ट नीति, हिंद महासागर में सक्रियता और पड़ोसी देशों को विकास-सहायता देना इसी व्यापक रणनीतिक सोच का भाग माना जा सकता है।

इस प्रकार कौटिल्य का मंडल सिद्धांत आधुनिक संदर्भ में ज्यों-का-त्यों लागू नहीं किया जा सकता, लेकिन उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण भारत की पड़ोसी नीति को समझने के लिए उपयोगी है। यह सिद्धांत बताता है कि विदेश नीति में आदशार्े के साथ-साथ शक्ति, सुरक्षा, हित और समयानुकूल रणनीति भी अत्यंत आवश्यक होती है।

भारत-चीन और भारत-पाकिस्तान संबंध: मंडल सिद्धांत की दृष्टि से

भारत की पड़ोसी नीति में चीन और पाकिस्तान दो ऐसे देश हैं जिनके साथ संबंध सुरक्षा, सीमा-विवाद, सामरिक प्रतिस्पर्धा और शक्ति-संतुलन से गहराई से जुड़े हुए हैं। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की दृष्टि से यदि देखा जाए तो किसी भी राज्य के निकटवर्ती क्षेत्र में स्थित प्रतिद्वंद्वी शक्तियाँ उसकी विदेश नीति को अधिक सतर्क और रणनीतिक बनाती हैं। भारत के संदर्भ में चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध इसी प्रकार की जटिल स्थिति को प्रकट करते हैं।

भारत-पाकिस्तान संबंधों में विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, कश्मीर प्रश्न, सीमा-पार आतंकवाद, युद्धों का अनुभव और अविश्वास की राजनीति प्रमुख भूमिका निभाते हैं। भारत ने समय-समय पर संवाद और शांति-प्रयासों को महत्व दिया, लेकिन आतंकवाद और सुरक्षा चुनौतियों के कारण उसकी नीति में कठोरता भी दिखाई देती है। यह स्थिति कौटिल्य की उस व्यावहारिक सोच से मेल खाती है, जिसमें राज्य को अपने हितों और सुरक्षा के अनुसार नीति अपनाने की सलाह दी गई है।

भारत-चीन संबंध और अधिक व्यापक सामरिक महत्व रखते हैं। दोनों देश एशिया की बड़ी शक्तियाँ हैं और इनके बीच सीमा-विवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय प्रभाव, हिंद-प्रशांत रणनीति और वैश्विक शक्ति-संतुलन से जुड़े प्रश्न मौजूद हैं। चीन की दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सक्रियता भारत के लिए सामरिक चिंता का विषय है। इसी कारण भारत अपनी सीमा-सुरक्षा, समुद्री नीति, क्षेत्रीय साझेदारी और बहुपक्षीय सहयोग को मजबूत कर रहा है।

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में शत्रु और मित्र की पहचान स्थिर नहीं रहती, बल्कि वह हित और परिस्थिति पर निर्भर करती है। भारत भी चीन और पाकिस्तान के साथ संबंधों में पूर्ण युद्ध या पूर्ण सहयोग की एकरेखीय नीति नहीं अपनाता।

चीन के साथ व्यापारिक संबंध बने रहते हैं, परंतु सीमा पर सतर्कता भी बनी रहती है। पाकिस्तान के साथ संवाद की संभावना रहती है, लेकिन आतंकवाद के प्रश्न पर कठोर नीति अपनाई जाती है।

इस प्रकार भारत-चीन और भारत-पाकिस्तान संबंध यह दिखाते हैं कि भारत की पड़ोसी नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय संतुलन और सामरिक यथार्थवाद प्रमुख तत्व हैं। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत इन संबंधों को समझने के लिए एक उपयोगी वैचारिक आधार देता है, क्योंकि वह विदेश नीति को भावनात्मक आदशार्ें से अधिक हित, शक्ति और सुरक्षा के आधार पर देखता है।

छोटे पड़ोसी देशों के साथ भारत की नीतिः सहयोग और संतुलन

भारत की पड़ोसी नीति केवल चीन और पाकिस्तान जैसे बड़े सुरक्षा प्रश्नों तक सीमित नहीं है, बल्कि नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों के साथ संबंध भी इसके महत्वपूर्ण अंग हैं। इन देशों के साथ भारत के संबंध भौगोलिक निकटता, सांस्कृतिक संपर्क, आर्थिक सहयोग, सीमा-प्रबंधन, जल-संसाधन, संपर्क-परियोजनाओं और क्षेत्रीय स्थिरता से जुड़े हुए हैं। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत की दृष्टि से ये संबंध इस बात को स्पष्ट करते हैं कि किसी भी राज्य को अपने आसपास के क्षेत्र में मित्रता, विश्वास और प्रभाव बनाए रखना आवश्यक होता है।

नेपाल और भूटान भारत के लिए हिमालयी सुरक्षा और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक संबंध गहरे हैं। भारत इन देशों में विकास-सहायता, आधारभूत ढाँचे, शिक्षा, स्वास्थ्य और ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा देता है। इससे क्षेत्रीय स्थिरता और पारस्परिक विश्वास को बल मिलता है। साथ ही भारत इन क्षेत्रों में बाहरी शक्तियों के प्रभाव को लेकर भी सतर्क रहता है।

बांग्लादेश के साथ भारत के संबंध पिछले वषार्ें में अधिक सकारात्मक और सहयोगपूर्ण बने हैं। सीमा-समझौतों, संपर्क परियोजनाओं, व्यापार, नदी-जल, ऊर्जा सहयोग और पूर्वोत्तर भारत की कनेक्टिविटी के कारण बांग्लादेश भारत की पड़ोसी नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह संबंध बताता है कि पड़ोसी देशों के साथ सहयोग केवल सुरक्षा का प्रश्न नहीं है, बल्कि विकास और संपर्क का भी विषय है।

श्रीलंका और मालदीव भारत की समुद्री सुरक्षा और हिंद महासागर नीति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन देशों में राजनीतिक स्थिरता, बंदरगाहों का विकास, समुद्री मागार्ें की सुरक्षा और बाहरी शक्तियों की सक्रियता भारत की रणनीतिक चिंता से जुड़ी हुई है। इसी कारण भारत इन देशों के साथ मानवीय सहायता, आर्थिक सहयोग, समुद्री सुरक्षा और कूटनीतिक संवाद को महत्व देता है।

म्यांमार भारत की पूर्वोत्तर नीति और एक्ट ईस्ट नीति के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ोसी है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा, सीमा-प्रबंधन, व्यापारिक संपर्क और दक्षिण-पूर्व एशिया से जुड़ाव में म्यांमार की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस प्रकार भारत छोटे पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में केवल मित्रता नहीं, बल्कि सामरिक सोच और क्षेत्रीय संतुलन को भी ध्यान में रखता है।

कौटिल्यीय दृष्टि से देखा जाए तो पड़ोसी क्षेत्र में मित्रवत वातावरण बनाना किसी भी राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। भारत की नीति भी यही संकेत देती है कि सहयोग, सहायता और संपर्क के माध्यम से वह अपने पड़ोस में विश्वास का वातावरण बनाना चाहता है, साथ ही क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को भी बनाए रखना चाहता है।

क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन और भारत की रणनीतिक कूटनीति

भारत की समकालीन पड़ोसी नीति में क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन एक महत्वपूर्ण तत्व है। दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बदलती सामरिक परिस्थितियों ने भारत को अपनी कूटनीति को अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और बहुस्तरीय बनाने के लिए प्रेरित किया है। भारत अपने पड़ोस में स्थिरता, सहयोग और विकास चाहता है, लेकिन साथ ही वह बाहरी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव और सामरिक दबावों को भी गंभीरता से देखता है।

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में शक्ति-संतुलन की अवधारणा अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। कौटिल्य ने यह स्पष्ट किया था कि राज्य को अपने हितों की रक्षा के लिए मित्रता, संधि, सामरिक तैयारी और परिस्थिति-आधारित नीति का उपयोग करना चाहिए। आधुनिक भारत भी इसी प्रकार अपनी क्षेत्रीय कूटनीति में सहयोग और संतुलन दोनों को साथ लेकर चलता है। वह पड़ोसी देशों के साथ विकास-सहायता, व्यापार, संपर्क और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करता है, वहीं सुरक्षा और सामरिक हितों की उपेक्षा नहीं करता।

चीन की दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती है। बंदरगाहों, अवसंरचना परियोजनाओं, आर्थिक निवेश और सामरिक संपर्कों के माध्यम से चीन का प्रभाव भारत के पड़ोसी देशों में बढ़ा है। इसके उत्तर में भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ संपर्क परियोजनाओं, विकास-साझेदारी, समुद्री सहयोग और रक्षा-संवाद को मजबूत किया है। यह नीति सीधे संघर्ष के बजाय संतुलित कूटनीतिक सक्रियता का उदाहरण है।

भारत की रणनीतिक कूटनीति में बहुपक्षीय सहयोग भी महत्वपूर्ण है। क्वाड, हिंद-प्रशांत दृष्टि, एक्ट ईस्ट नीति, सागर नीति और क्षेत्रीय संपर्क योजनाएँ भारत की व्यापक शक्ति-संतुलन नीति का हिस्सा हैं। इन पहलों के माध्यम से भारत अपने समुद्री हितों की रक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता, मुक्त समुद्री मागार्ें और सामरिक साझेदारी को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार भारत की क्षेत्रीय कूटनीति कौटिल्यीय यथार्थवाद की आधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में समझी जा सकती है। भारत अपने पड़ोस में सहयोग की भाषा बोलता है, लेकिन सुरक्षा और शक्ति-संतुलन की आवश्यकता को भी समान रूप से महत्व देता है। यही संतुलन उसकी समकालीन पड़ोसी नीति को व्यावहारिक और रणनीतिक बनाता है।

कौटिल्यीय दृष्टि की समकालीन प्रासंगिकता और सीमाएँ

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत आज की भारतीय पड़ोसी नीति को समझने में एक उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करता है, परंतु इसे सीधे-सीधे आधुनिक विदेश नीति पर लागू करना उचित नहीं होगा। कौटिल्य का राजनीतिक संदर्भ प्राचीन राजतंत्रीय व्यवस्था से संबंधित था, जबकि वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था संप्रभु राष्ट्रों, अंतरराष्ट्रीय कानून, वैश्विक संस्थाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और आर्थिक परस्पर निर्भरता पर आधारित है। इसलिए मंडल सिद्धांत की उपयोगिता उसके मूल विचारों में है, न कि उसके यांत्रिक प्रयोग में।

E-ISSN NO:2349-0721

इस सिद्धांत की सबसे बड़ी प्रासंगिकता यह है कि यह विदेश नीति में राष्ट्रीय हित और सुरक्षा को केंद्रीय स्थान देता है। भारत की समकालीन पड़ोसी नीति में भी यही तत्व दिखाई देते हैं। भारत अपने पड़ोस में शांति और सहयोग चाहता है, लेकिन अपनी सीमाओं, समुद्री हितों, आतंकवाद-विरोधी नीति, क्षेत्रीय संपर्क और सामरिक संतुलन को लेकर सतर्क रहता है। यह दृष्टि कौटिल्य के यथार्थवादी राजनीतिक चिंतन के निकट है।

कौटिल्य ने परिस्थिति के अनुसार नीति बदलने की बात कही थी। आधुनिक भारत भी अलग-अलग पड़ोसी देशों के साथ एक ही प्रकार की नीति नहीं अपनाता। बांग्लादेश के साथ संपर्क और सहयोग, भूटान के साथ सामरिक विश्वास, नेपाल के साथ सांस्कृतिक निकटता, श्रीलंका और मालदीव के साथ समुद्री संवाद, चीन के साथ प्रतिस्पर्धा और पाकिस्तान के साथ सुरक्षा-संबंधी कठोरता-ये सभी दश्र्ााते हैं कि भारत की नीति परिस्थिति और हितों के अनुसार बदलती है।

फिर भी मंडल सिद्धांत की सीमाएँ भी हैं। आज का विश्व केवल सैन्य शक्ति या भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा से संचालित नहीं होता। व्यापार, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक अर्थव्यवस्था, तकनीक, मानवाधिकार, लोकतंत्र, बहुपक्षीय मंच और जनता-से-जनता संबंध भी विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। इसलिए कौटिल्यीय दृष्टि को आधुनिक संदर्भ में विस्तार देकर समझना आवश्यक है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कौटिल्य का मंडल सिद्धांत भारत की पड़ोसी नीति को समझने के लिए ऐतिहासिक और वैचारिक संकेत देता है। यह भारत को व्यावहारिक, संतुलित और सुरक्षा-सचेत विदेश नीति की ओर देखने में सहायता

करता है, लेकिन आधुनिक कूटनीति की जटिलताओं को समझने के लिए इसे समकालीन संदभार्ें के साथ जोड़कर ही उपयोगी बनाया जा सकता है।

भारत की पड़ोसी नीति में राष्ट्रीय हित और कूटनीतिक व्यवहार

भारत की पड़ोसी नीति का सबसे महत्वपूर्ण आधार राष्ट्रीय हित है। किसी भी राज्य की विदेश नीति तभी प्रभावी मानी जाती है जब वह अपनी सुरक्षा, आर्थिक विकास, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को संतुलित रूप में आगे बढ़ाए। भारत भी अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध बनाते समय केवल भावनात्मक या सांस्कृतिक निकटता को आधार नहीं बनाता, बल्कि व्यावहारिक हितों, सुरक्षा आवश्यकताओं और दीर्घकालीन रणनीतिक लक्ष्यों को ध्यान में रखता है। यह दृष्टि कौटिल्य के राजनीतिक चिंतन से मिलती-जुलती है, जिसमें राज्यहित को सवर्ोपरि माना गया है।

भारत की पड़ोसी नीति में कूटनीतिक व्यवहार कई स्तरों पर दिखाई देता है। एक ओर भारत अपने पड़ोसियों को विकास-सहायता, आर्थिक सहयोग, आपदा राहत, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा और संपर्क-परियोजनाओं में सहयोग देता है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी सीमाओं, समुद्री मागार्ें, आतंकवाद-रोधी नीति और सामरिक हितों को लेकर सजग रहता है। इस प्रकार भारत की नीति सहयोग और सुरक्षा दोनों को साथ लेकर चलती है।

कौटिल्य ने भी राज्य को परिस्थिति के अनुसार संधि, सहयोग, प्रतीक्षा, सैन्य तैयारी और संतुलन की नीति अपनाने की सलाह दी थी। आधुनिक भारत की पड़ोसी नीति में भी यही व्यावहारिकता दिखाई देती है। भारत बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका और मालदीव के साथ सहयोग बढ़ाता है, लेकिन साथ ही क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन और बाहरी प्रभावों पर भी ध्यान रखता है। पाकिस्तान और चीन के संदर्भ में भारत की नीति अधिक सुरक्षा-सचेत और रणनीतिक दिखाई देती है।

भारत की कूटनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वह पड़ोसी देशों को अलग-अलग परिस्थितियों के आधार पर देखता है। सभी देशों के लिए एक समान नीति नहीं अपनाई जाती, बल्कि प्रत्येक देश की राजनीतिक स्थिति, भारत के साथ ऐतिहासिक संबंध, सुरक्षा-संबंधी महत्व और क्षेत्रीय भूमिका को ध्यान में रखकर नीति बनाई जाती है। यही दृष्टि मंडल सिद्धांत की उस समझ से जुड़ती है जिसमें प्रत्येक राज्य का महत्व उसकी स्थिति और हितों के आधार पर निर्धारित होता है।

इस प्रकार भारत की पड़ोसी नीति में राष्ट्रीय हित और कूटनीतिक व्यवहार का संतुलित रूप दिखाई देता है। यह नीति न तो केवल आदर्शवाद पर आधारित है और न ही केवल संघर्ष पर। इसमें सहयोग, सतर्कता, संवाद, शक्ति-संतुलन और रणनीतिक तैयारी का ऐसा मिश्रण है, जो समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाता है।

निष्कर्ष

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक ऐसी महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो राज्य के बाह्य संबंधों को शक्ति, हित, सुरक्षा और परिस्थिति के आधार पर समझने का अवसर देती है। यह सिद्धांत बताता है कि विदेश नीति में स्थायी मित्रता या स्थायी शत्रुता से अधिक महत्वपूर्ण राज्य का राष्ट्रीय हित और सामरिक संतुलन होता है। इसी कारण कौटिल्य का चिंतन आज भी भारत की समकालीन पड़ोसी नीति को समझने में वैचारिक रूप से उपयोगी सिद्ध होता है।

भारत की पड़ोसी नीति में सहयोग और सतर्कता दोनों का संतुलन दिखाई देता है। भारत बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव और म्यांमार जैसे देशों के साथ संपर्क, विकास-सहायता और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाता है, जबकि चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के संदर्भ में सुरक्षा और शक्ति-संतुलन को अधिक महत्व देता है। यह नीति कौटिल्यीय यथार्थवाद की उस भावना से जुड़ती है जिसमें राज्य को परिस्थिति के अनुसार रणनीति बनानी होती है।

अतः कहा जा सकता है कि कौटिल्य का मंडल सिद्धांत आधुनिक भारत की विदेश नीति को सीधे निर्देशित नहीं करता, लेकिन उसकी मूल अवधारणाएँ—राष्ट्रीय हित, सुरक्षा, कूटनीतिक लचीलापन और शक्ति-संतुलन—आज भी प्रासंगिक हैं। भारत की समकालीन पड़ोसी नीति इन्हीं तत्वों के संतुलित प्रयोग का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

संदर्भ सूची

1. कौटिल्य. ''अर्थशास्त्र''.

2. शमशास्त्री, आर. ''कौटिल्य अर्थशास्त्र''.

3. अप्पादुरई, ए. ''भारतीय राजनीतिक चिंतन''.

4. अल्तेकर, ए. एस. ''प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था''.

5. पाण्डेय, वी. सी. ''भारतीय विदेश नीति''.

6. जयशंकर, एस. ''द इंडिया वेरू स्ट्रेटेजीज फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड''.

7. मेहता, जसवंत. ''भारतीय कूटनीति और विदेश नीति''.

8. थापर, रोमिला. ''प्राचीन भारत का इतिहास''.

9. चक्रवर्ती, राधाकुमुद. ''प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार''.

10. भारत की पड़ोसी नीति, दक्षिण एशियाई कूटनीति और क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन से संबंधित शोध-लेख एवं नीति-अध्ययन।

IEJRD
E-ISSN NO:2349-0721